Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जुलाई/2022 ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

JULY-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

22-05-2022 को आयोजित सालाना इज्तेमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला एर्नाकुलम (केरल) के अवसर पर श्री एम ताजुद्दीन साहब नायब सदर दक्षिण भारत भाषण देते हुए एवं हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

27-03-2022 मज्लिस अंसारुल्लाह मान्जेश्वर (केरल) में आयोजित तरबियती इजलास के अवसर में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

27-03-2022 मज्लिस अंसारुल्लाह मान्जेश्वर (केरल) में आयोजित तरबियती इजलास के अवसर में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

05-06-2022 को कुग्गा सुधाना में आयोजित तरबियती कैंप मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला जालंधर (पंजाब) के अवसर पर श्री यूसुफ़ अहमद अनवर साहब क़ाइद वक़्फ़े जदीद के साथ एक ग्रुप फ़ोटो।

27-03-2022 को आयोजित तरबियती कैंप मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला बीजापुर (कर्नाटक) के अवसर पर श्री जावेद अहमद नदीम साहब के साथ एक ग्रुप फ़ोटो।

22-05-2022 ऋषि नगर (ज़िला कुलगाम, कश्मीर) में आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य ।

22-05-2022 ऋषि नगर (ज़िला कुलगाम, कश्मीर) में आयोजित तरबियती इजलास की सदारत करते हुए श्री मुजाहिद अहमद शास्त्री साहब नायब सदर अंसारुल्लाह सफ़े दोम ।

23-03-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह मान्जेश्वर (केरल) के द्वारा आयोजित बुक स्टाल में सेवा करने वाले अंसार सदस्यों के दो भिन्न-भिन्न दृश्यों को देखा जा सकता है ।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ   نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ   وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 जुलाई 2022 **Issue - 7**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - रसूल के अपमान के जवाब में मुसलमानों में एकता	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन रसूलुल्लाह के अपमान पर हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?	6
कुरआन की तिलावत का महत्तव	8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

قُلْ اَمَرَ رَبِّیْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِیْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ○

(सूरत अलआराफ:आयत 30)

अनुवाद - तू कह दे कि मेरे रब ने इन्साफ़ का आदेश दिया है। इसी तरह यह कि तुम हर मस्जिद में अपने ध्यान (अल्लाह की तरफ़) सीधे रखो। और धर्म को इस के लिए ख़ालिस करते हुए उसी को पुकारा करो। जिस तरह उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया इसी तरह तुम (मरने के बाद) लौटोगे।

दर्सुल हदीस

عَنْ فَاطِمَةَ الزَّهْرَآءِ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ اِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ، قَالَ : بِسْمِ اللهِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَاِذَا خَرَجَ قَالَ : بِسْمِ اللهِ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللهِ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ ۔

(मस्नद अहमद हदीस फतिमा पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

अनुवाद -हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ि वर्णन करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मस्जिद में दाख़िल होने लगते तो यह दुआ पढ़ते। अल्लाह तआला के नाम के साथ अल्लाह के रसूल पर सलामती हो। हे मेरे अल्लाह मेरे गुनाह बख़्श और अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे। और जब आप मस्जिद से निकलने लगते तो यह दुआ मांगते अल्लाह तआला के नाम के साथ अल्लाह तआला के रसूल पर सलामती हो। हे मेरे अल्लाह मेरे गुनाह बख़्श और मेरे लिए अपने फ़ज़ल के दरवाज़े खोल दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

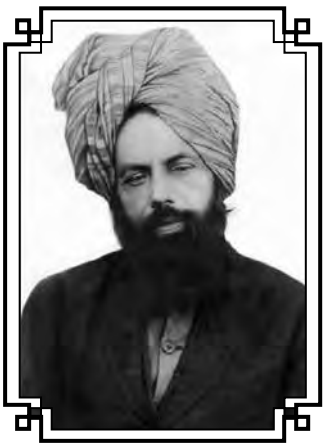

ख़ुदा तआला की यह इच्छा है कि मानव जाति में एकता तथा भाईचारा पैदा हो।

इस्लाम का उदाहरण हम यों दे सकते हैं कि जैसे पिता अपने पितृत्व के अधिकारों को चाहता है इसी प्रकार वह चाहता है कि सन्तान में एक दूसरे के साथ हमदर्दी हो। वह नहीं चाहता कि एक दूसरे को मारे। इस्लाम भी जहां यह चाहता है कि ख़ुदा तआला का कोई भागीदार न हो वहां उसका यह भी उद्देश्य है कि मानव जाति में प्रेम और एकता हो।

नमाज़ में जमाअत का जो अधिक पुण्य रखा है उसमें यही उद्देश्य है कि एकता पैदा होती है और फिर उस एकता को व्यावहारिक रूप में लाने की यहां तक हिदायत और ताकीद है कि परस्पर पावों भी समान हों और पंक्ति सीधी हो और एक दूसरे से मिले हुए हों। इस से तात्पर्य यह है कि जैसे एक ही मनुष्य का आदेश रखें और एक के प्रकाश दूसरे में समा सकें। वह विवेक जिस से स्वार्थ परायणता पैदा होती है न रहे। यह भलीभांति स्मरण रखो कि मनुष्य में यह शक्ति है कि वह दूसरे के प्रकाशों को खींचता है। फिर इसी एकता के लिए आदेश है कि मुहल्ले की मस्जिद में प्रतिदिन नमाज़ें और सप्ताह के बाद शहर की मस्जिद में और फिर वर्ष के बाद ईदगाह में एकत्र हों और समस्त संसार के मुसलमान वर्ष में एक बार बैतुल्लाह में एकत्र हों। इन समस्त आदेशों का उददेश्य वही एकता है।

अल्लाह तआला ने अधिकारों के दो ही भाग रखे हैं। एक अल्लाह के अधिकार दूसरे बन्दों के अधिकार इस पर बहुत कुछ पवित्र कुर्आन में वर्णन किया गया है एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (अलबक़रह-201

अर्थात अल्लाह तआला को स्मरण करो कि जिस प्रकार तुम अपने बाप-दादा को स्मरण करते हो अपितु उस से भी बढ़कर। यहां दो संकेत हैं। एक तो अल्लाह तआला के स्मरण को बाप-दादों के स्मरण से समानता दी है इसमें यह भेद है कि बाप-दादों का व्यक्तिगत प्रेम स्वाभाविक प्रेम होता है। देखो बच्चे को जब मां मारती है वह उस समय भी मां-मां ही पुकारता है जैसे इस आयत में अल्लाह तआला मनुष्य को ऐसी शिक्षा देता है कि वह ख़ुदा तआला से स्वाभाविक प्रेम का संबंध पैदा करे। इस प्रेम के बाद ख़ुदा के आदेशों का आज्ञापालन स्वयं पैदा हो जाता है। यही वह असल स्थान मारिफ़त का है जहां मनुष्य को पहुंचना चाहिए अर्थात् उसमें अल्लाह के लिए स्वाभाविक और व्यक्तिगत प्रेम पैदा हो जाए।"

(लेक्चर लुधियाना रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 282,283 प्रकाशन 2003 ई)

सम्पादकीय

रसूल के आपमान के जवाब में मुस्लमानों की एकता

इन दिनों बनारस की ज्ञानवापी मस्जिद के मामला को लेकर कई दिनों से भारत के समुदायों में तनाव का माहौल फैला हुआ है। चूँकि यह मामला अदालत के अन्तर्गत है। इस लिए दोनों बिरादरियों को धैर्य से काम लेना चाहिए। इस बारे में जर्नलिस्ट पूनम आई कोशिश इस तरह लिखती हैं।

"निसन्देह पैग़म्बर मुहम्द (स) के ख़िलाफ़ असभ्य भाषा जो(एक पार्टी के)दो वक्ताओं ने पिछले हफ़्ते टीवी और ट्वीटर पर प्रयोग की। वह घृणा के योग्य है। जिसके कारण से कुवैत,क़तर,सऊदी अरब और ईरान जैसे कई खाड़ी देशों ने न केवल उस की भृतस्ना की बल्कि माफ़ी की भी मांग की।

(इस पार्टी)ने इस पर यह कहते हुए माफ़ी मांगी कि वह समस्त धर्मों का सम्मान करती है और किसी भी धार्मिक शख़्स के अपमान की कठोर निन्दा करती है। पार्टी ने अपने एक प्रवक्ता को मुअत्तल किया और दूसरे प्रवक्ता को पार्टी से निकाल दिया।"

(हिन्द समाचार 8 जून 2022 ई पृष्ठ 4 कालम 2)

यह एक अच्छी बात है कि कुछ मुस्लमान देशों ने रसूलके अपमान के इस मामला में संजीदगी का प्रकटन किया है। इस्लाम ,इस्लाम धर्म के संस्थापक और क़ुरआन करीम के बारे में जब कभी किसी की तरफ़ से अपमान का प्रकटन हो तो बहुत सब्र तथा धैर्य के साथ क़ानून की पाबंदी करते हुए समस्त मुस्लमानों को एकता के साथ मुक़ाबला करना चाहिए। पिछले दिनों जमाअत अहमदिया कए इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ ने रूस और यूक्रेन की जंग के परिपेक्ष्य में मुस्लमानों को एक इकाई की शिक्षा प्राप्त करने की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया था।

"आज फिर मैं दुनिया के जो मौजूदा हालात हैं, इस बारे में कहना चाहता हूँ। दुआ करें अल्लाह तआला दोनों तरफ़ की हुकूमतों को अक़्ल दे, समझ दे और इन्सानियत का ख़ून करने से ये लोग रुक जाएं। साथ ही यह जंग जो है इस से हमें, मुस्लमानों को भी शिक्षा लेनी चाहिए कि किस तरह ये लोग एक हो गए हैं लेकिन मुस्लमान बावजूद एक कलिमा पढ़ने के कभी एक नहीं होते। एक देश तबाह किया, इराक़ तबाह करवाया, सीरिया तबाह करवाया, यमन की तबाही हो रही है और ग़ैरों से करवाते हैं और ख़ुद भी कर रहे हैं बजाय उस के कि एक हों।

कम से कम यह इकाई की शिक्षा ही यह मुस्लमान उन लोगों से सीख लें।

अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी रहम करे। मुस्लमानों पर भी रहम करे। मुस्लिम उम्मत पर रहम करे और यह उसी अवस्था में हो सकता है जब यह लोग ज़माने के इमाम को मानने वाले भी हों जो इसी उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भेजा है। अल्लाह तआला अक़्ल और समझ दे और साथ ही जहां यह अपनी हालतें दरुस्त करने वाले हों वहां दुनिया के लिए दुआ भी करें और अपने संसाधन प्रयोग कर के दुनिया को जंगों से रोकने वाले भी हों न कि ख़ुद जंगों में शामिल होने वाले।"

(ख़ुत्बा जुम्अ:11 मार्च 2022 ई)

कितना ही अच्छा होता कि हर नमाज़ में इतनी हाज़िरी हो कि हर नमाज़ जुम्अ: की नमाज़ महसूस हो। हमें चाहिए कि ग़ैर बाद मस्जिदों को आबाद करने की कोशिश करें। मस्जिदों की हिफ़ाज़त तथा सुनदरता वास्तवमें नमाज़ियों से है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

''मस्जिदों की असल सुन्दरता इमारतों के साथ नहीं है बल्कि उन नमाज़ियों के साथ है जो श्रद्धा के साथ नमाज़ पढ़ते हैं .. मस्जिद की रौनक नमाज़ियों के साथ है.. मस्जिदों के लिए आदेश है कि तक़्वा के लिए बनाई जाएं ।''

(मलफ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 491)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "मस्जिदें जन्नत के बाग़ा हैं।" उनमें खाने पीने से अभिप्राय سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ना है।

(तिरमिज़ी किताबुल दावात)

दुआ है कि अल्लाह तआला समस्त मुस्लमानों को इस ज़माने के हकम तथा अदल को स्वीकार करने ,आपस में सहमत होने और मस्जिदों के हुक़ूक़ श्रद्धा के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

रसूलुल्लाह के अपमान पर हमारी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए?

मानवता के अपकारक, पवित्र नबी, इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा ज़िंदगी के बारे में आपके विरोधी अपनी निराशा, द्वेष, अहंकार और सच्चाई के विरोध की भावना में बह कर अपमान तथा गुस्ताख़ी के करते रहते हैं। आजकल भारत में आँहज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के बारे में अपमानजनक बातों को लेकर मुस्लमानों के द्वारा ग़म तथा ग़ुस्सा का प्रकटन किया जा रहा है। चूँकि एक मुस्लमान अल्लाह के रसूल का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता। अत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

"एक सच्चे मुस्लमान के लिए जो हज़रत आदम से लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता है इस के लिए सख़्त बेचैनी का कारण है कि किसी भी रसूल की, किसी भी अल्लाह तआला के भेजे हुए का अपमान किया जाए और इस की मान सम्मान पर कोई हमला किया जाए। और जब ख़ातमल अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात का प्रश्न हो जिन्हें ख़ुदा तआला ने सर्वोत्तम रसूल फ़रमाया है तो एक हक़ीक़ी मुस्लमान बेचैन हो जाता है। वह अपनी गर्दन तो कटवा सकता है, अपने बच्चों को अपने सामने क़तल होते हुए तो देख सकता है, अपने माल को लुटते हुए देख सकता है लेकिन अपने आक़ा तथा मौला की तौहीन तो एक तरफ़, कोई हल्का सा ऐसा शब्द भी नहीं सुन सकता जिसमें से किसी किस्म की बे-अदबी का हल्का सी भी शंका हो।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 21 जनवरी 2011 ई)

ऐसे में मुस्लमानों की तरफ़ से इस्लामी शिक्षा के अनुसार शान्तिपूर्ण प्रतिक्रिया होनी चाहिए। अगर ग़लत प्रतिक्रिया का इज़हार हो तो ग़ैरों को इस्लाम को बदनाम करने का मौक़ा मिलता है और लक्ष्य से ध्यान हट जाता है।

(1)मुस्लमानों को चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आदर्श को को दुनिया के सामने पेश करें। आप के उपकार वर्णन करो, दुनिया को इन ख़ूबसूरत और रोशन पहलूओं से आगाह करो जो दुनिया की नज़र से छुपे हैं ।

(2)हमें अपनी सुधार की तरफ़ ध्यान दीना चाहिए। हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं।

"हमारी प्रतिक्रिया(reaction) यही होनी चाहिए कि बजाय सिर्फ तोड़ फोड़ के हमें अपनी समीक्षा करने की तरफ़ तवज्जा पैदा करनी चाहिए, हम देखें हमारे कर्म क्या हैं, हमारे अंदर ख़ुदा का ख़ौफ़ कितना है, इस की इबादत की तरफ़ कितना ध्यान है, दीनी आदेशों पर अनुकरण करने की तरफ़ कितना ध्यान है, अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाने की तरफ़ कितना ध्यान है।"

(ख़ुत्बा जुमअ:10 फरवरी 2006 ई)

(3)हमें बहुत अधिक दुआएं करनी चाहिए कि अल्लाह तआला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम को ख़ुद सज़ा दे। तोड़ फोड़ से कोई स्थायी उपाय न होगा।

' यह आग ऐसी हो जो दुआओं में भी ढले और इस के शोले प्रत्येक क्षण आसमान तक पहुंचते रहीं। अत: यह आग है जो हर अहमदी ने अपने दिल में लगानी है और अपने दर्द को दुआओं में है ।" (वही)

(4)बहुत अधिक दुरूद शरीफ़ का विर्द करना चाहिए।

(5)ग़ैर मुस्लिमों के साथ उत्तम व्यवहार से पेश आना चाहिए।

(6)मुस्लमान इस ज़माने के मसीह तथा महदी को क़बूल करें। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं।

''यह ज़माना जो आख़रीन का ज़माना है जिस ज़माने से इस्लाम की विजय जुड़ी हैं और यह विजय हम सब जानते हैं कि तलवारों या बंदूक़ो या तोपों और गोलों से नहीं हुईं इस में सबसे बड़ा हथियार दुआ का है फिर तर्क का हथियार है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम को दिया गया है। और इसी के माध्यम से इंशाअल्लाह तआला इस्लाम ने विजित होना है।"

(ख़ुत्बा जुमअ: 24 फरवरी 2006 ई)

ऊपर वर्णन की गई समस्त हिदायतों पर हम समस्त अन्सारुल्लाह के सदस्यों को अल्लाह तआला अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed **Cell : 9949310679**
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

कुर्आन की तिलावत का महत्तव

तक़रीर इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्ला भारत 2022 ई

(अज़ीज़ अहमद नासिर ,नायब क़ाइद उमूमी मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ۔

(अलबक़र 122)

अनुवाद: वे लोग जिनको हमने किताब दी वे उस की वैसी ही तिलावत करते हैं जैसा कि इस की तिलावत का हक़ है। यही वे लोग हैं जो वास्तव में इस पर ईमान लाते हैं।

आज की इस बरकत वाली मज्लिस में ख़ाकसार की तक़रीर का अनवान "तिलावत क़ुरआन-ए-करीम" की एहमीयत है। क़ुरआन करीम वह अज़ीम, दाइमी किताब है जिसका हर शब्द अल्लाह तआला के मुबारक मुँह से निकला और हज़रत अक़दस मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र दिल पर नाज़िल हुआ। यह रहमतों का संदेशा है, शफ़क़तों का गुलदस्ता है, अमन तथा सलामती वाला है। यह वह हिदायत का मार्ग है जिस पर अनुकरण कर के इन्सान ख़ुदा का कुर्ब प्राप्त कर सकता है। और यही इन्सानी पैदाइश का कारण है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

कुरां ख़ुदा नुमा है ख़ुदा का कलाम है
बे उस के मार्फ़त का चमन ना तमाम है

सामईन किराम । क़ुरआन-ए-करीम वह इल्हामी किताब है जिसका नाम ख़ुदा ने ख़ुद रखा है। इसी लफ़्ज़ क़ुरआन के अन्दर पेशगोई मौजूद है कि यह किताब बहुत अधिक पढ़ी जाएगी, अत: यह कोई मामूली दावा नहीं कि जब दुनिया में लाखों करोड़ों किताबें मौजूद होंगी उस वक़्त भी यह किताब निहायत मुहब्बत और इश्क़ से पढ़ी जाएगी और बाक़ी सारी किताबों पर फ़ौक़ियत ले जाएगी। अत: आज दुनिया में कोई ऐसी इल्हामी किताब नहीं जो इतनी अधिक पढ़ी जाती हो, जितनी दुनिया में क़ुरआन की तिलावत की जाती है। और आज दुनिया में लाखों हुफ़्फ़ाज़ इस के अलग होने होने के गवाह हैं।

न हो मुमताज़ क्यों इस्लाम दुनिया भर के दीनों पर
वहां मज़हब किताबों में यहां क़ुरआन सीनों में

क़ुरआन-ए-करीम वह अज़ीम किताब है जिसका पढ़ना भी सवाब और पढ़ाना भी ख़ैर- तथा-बरकत का कारण, जिसका सुनना भी रहमत का कारण और सुनाना भी रहमत। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अलिफ लाम मीम' यह तीन शब्द हैं उस के हर शब्द की तिलावत पर दस दस नेकियों का सवाब मिलता है। फिर फ़रमाया कि:तुम में से सबसे बेहतर वह है जो ख़ुद क़ुरआन सीखता है और फिर आगे दूसरों को सिखाता है, पढ़ाता है। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह-तआला सुनने वालों की ये फ़ज़ीलत वर्णन फ़रमाता है कि जब क़ुरआन पढ़ा जा रहा हो तो ख़ामोश रहो और ग़ौर से सुनो ताकि तुम पर रहम जाए।(आराफ़ 20)

सामईन किराम: अब बताएं दुनिया में है कोई ऐसी किताब जो ऐसी फ़ज़ीलत तथा बरकत अपने अंदर रखती हो कि इस का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना फ़ज़ल ,बरकत तथा रहमत का कारण हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:।

क़ुरआँ ख़ुदाए रहमां सिखलाए राह-ए-इरफ़ाँ
जो इस के पढ़ने वाले उन पर ख़ुदा के फ़ैज़ां
क़ुरआन-ए-मजीद' अल्लाह मियां का ख़त है जो

मेरे नाम आया''यह इन्सानी फ़ित्रत है कि अपने प्यारे के और महबूब के आने वाले ख़त को बार-बार पढ़ता है और इस में एक लज़्ज़त महसूस करता है कभी उसे चूमता है कभी उसे आँखों से लगाता और कई बार तो जगह जगह लिए फिरता है और इस के मज़मून के एक एक लफ़्ज़ को अपने दिल तथा दिमाग़ में उतारता है अत: वह ख़त जो रहमान ख़ुदा ने हमारे नाम भेजा है इस की हमें किस क़दर इज़्ज़त करनी होगी। किस क़दर पढ़ना होगा और किस क़दर इस पर अनुकरण करना होगा। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं।

"तुम्हारे लिए ज़रूरी तालीम यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को महजूर की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में ज़िन्दगी है जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे।''(कशती नूह)

सही मुस्लिम की एक हदीस है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा करो क्योंकि क़यामत के दिन यह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअत करेगा। इसीतरह फ़रमाया: क़यामत के दिन क़ुरान-ए-पाक और इस पर अनुकरण करने वाले लोगों को बुलाया जाएगा जो तिलावत में माहिर होगा वह क़यामत के दिन मुअज़्ज़िज़ फ़रिश्तों के साथ होगा।

आशिक़ क़ुरआन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:।

''क़ुरआन-ए-मजीद तदब्बुर से पढ़ो और इस से बहुत प्यार करो कि तुम ने किसी से न किया हो कि कलाम इलाही की मुहब्बत जन्नत में ले जाती है। और ढाल की तरह बचाने वाली है।''

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन से अपनी ला-फ़ानी मुहब्बत का इज़हार करते हुए फ़रमाते हैं।

दिल में यही है हर दम तेरा सहीफ़ा चौमूं
क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काअबा मेरा यही है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि को जो क़ु-रआन-ए-करीम से मुहब्बत थी उस का ज़िक्र करते हुए आप रज़ि फ़रमाते हैं: ।"मुझे क़ुरआन-ए-मजीद से बढ़कर कोई चीज़ प्यारी नहीं लगती ,हज़ारों किताबें पढ़ी हैं। इन सब में मुझे ख़ुदा की ही किताब पसन्द आई।'' (बदर18 जनवरी 1912 ई)

फिर फ़रमाते हैं:। क़ुरआन मेरी ग़िज़ा,मेरी तसल्ली और इतमीनान का सच्चा ज़रीया है और मैं जब तक इस को कई बार मुख़्तलिफ़ रंग में पढ़ नहीं लेता, मुझे आराम और चैन नहीं आता।...ख़ुदा तआला मुझे बहिश्त और हश्र में नेअमतें दे तो मैं सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ माँगूँगा ताकि हश्र के मैदान में ही क़ुरआन शरीफ़ पढ़ूं,पढ़ाऊं और सुनों।''

(तज़किरतुल महदी भाग 1 पृष्ठ 246)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं।

"हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि इस ज़माने में इस किताब को पढ़ने से मुख़ालिफ़ीन के मुँह-बंद किए जा सकते हैं और यही इस्लाम की इज़्ज़त बचाना है।.. क़ुरआन-ए-करीम में वे तर्क हैं जिनसे इस्लाम की इज़्ज़त क़ायम होगी और इस झूठ की जो मुख़ालिफीन इस्लाम पर इफ़्तिरा करते हैं, जड़ें उखेड़ी जाएँगी। और यही उसूल है जिससे इस्लाम की इज़्ज़त बचाई जाएगी। झूठ का ख़ातमा उस वक़्त होगा जब हमारे हर अमल में इस तालीम की छाप नज़र आ रही होगी और यह छाप भी इस वक़्त होगी जब हम इस पर ग़ौर करते हुए बाक़ायदा तिलावत करने वाले बनेंगे। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 7 मार्च 2008 ई)

अल्लाह तआला हमें क़ुरआन की सच्ची मुहब्बत प्रदान करे और हमारे सीनों को इस नूर से मुनव्वर कर दे। आमीन

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2022 के इज्तिमा में

शारीरिक एवं बौद्धिक प्रतिस्पर्धाओं की रूप रेखा

ज्ञान वर्धक मुक़ाबले

1- **मुक़ाबला हुस्ने क़िरअत** - (समय 2 मिन्ट निश्चित है)

विशेष श्रेणी-(मुबल्लिग़ीन किराम) प्रथम श्रेणी-(ग्रेजुएट, मुअल्लिम अन्सार)। द्वित्तीय श्रेणी- (ग्रेजुएट से कम अन्सार)। मुक़ाबले से पहले टैस्ट लिया जाएगा, तिलावत देखकर करने की अनुमति होगी ताकि कोई नासिर ग़लत न पढ़े।

निम्नलिखित सूरतों की तिलावत की जा सकती है-

1- सूर: अलबक़र: पहला रुकूअ

2- सूर: अलबक़र: आयत-22 से 24 आयतें

3- सूर: हाम मीम सिज्दा पहला रुकूअ

4- सूर: रहमान आयात 1 से 14

5- सूरह अल्जुम्अ: आयत 1 से 5

6 सूर: अल क़दर सम्पूर्ण

2 - मुक़ाबला हिफ़्ज़-ए-क़ुर्आन - सूर: अलबक़रा की आरम्भिक 17 आयतें, अन्तिम पारा अम्म की अन्तिम 20 सूरतें (सूर: अत्तीन से सूर: अन्नास तक)

(यह मुकाबला केवल दोयम मेयार के लिए विशेष रूप से है।)

3 - मुक़ाबला नज़्म ख़्वानी (कविताएँ)- (समय 2 मिन्ट) प्रथम श्रेणी, द्वित्तीय श्रेणी के लिए (केवल निम्नलिखित कविताओं में से ही कोई एक कविता मुक़ाबले में पढ़ी जाए)

1- (दुर्रे समीन से) - जमालो हुस्ने क़ुर्आं नूरे जाँ हर मुसलमाँ है।

2- नूरे फ़ुर्क़ां है जो सब नूरों से अजला निकला

3- ईमान मुझ को दे दे इरफान मुझ को देदे। (कलाम-ए-महमूद से)

4- कलाम हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब(क़ुर्आन सब से अच्छा क़ुरआन सब से प्यारा)

4- मुक़ाबला तक़रीर - (समय 3 मिन्ट) प्रथम श्रेणी, द्वित्तीय श्रेणी तथा विशेष श्रेणी- विषय -

1- क़ुरआन और साईंस।

2- तिलावत क़ुरआन का महत्व।

3- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और क़ुर्आन की सेवा।

4- ख़िलाफत अहमदिया और क़ुरआन।

5- हिफाज़त क़ुरआन।

6- क़ुरआन मजीद की अन्य धार्मिक पुस्तकों पर प्राथमिकता।

7- क़ुर्आन मजीद एक सम्पूर्ण जीवन शैली

8- क़ुर्आन का प्रकाशन और हमारा कर्तव्य।

9- क़ुर्आन मजीद और नफस की पवित्रता।

10. इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और मज्लिस अन्सारुल्लाह।

5- मुक़ाबला क़ुइज़- (निसाब) कश्ती नूह सम्पूर्ण किताब, ख़िताब हुज़ूर-ए-अनवर- (1)11 जुलाई 2014 (2)21 अक्तूबर 2005 ई, सामान्य ज्ञान (जी.के.)

आवश्यक निर्देश - समस्त व्यक्तिगत मुकाबलों में 50 से कम तज्नीद की मज्लिस से 2 अन्सार और 50 से अधिक तज्नीद की मजलिस से 4 अन्सार मुक़ाबलों में भाग लेंगे ।

शारीरिक व्यायाम के मुक़ाबले

1- प्रथम श्रेणी -

(क) 50 मीटर दौड़ (ख)म्यूज़िकल चियर (ग) रिंग (घ) बैड मिन्टन (स)धीमे साईकिल चलाना।

2- द्वित्तीय श्रेणी -

(अ) 100 मीटर दौड़ (ब) रिंग (ज)बैड मिन्टन (द) साईकिलरेस

3- संयुक्त श्रेणी - (अ) वॉली बॉल (ब) रस्सा कशी (ज)म्यूज़िकल चेयर (द)निशाना ग़ुलेल।

.....